

नवभारत टाइम्स • विचार

नवभारत टाइम्स | नई दिल्ली/एनसीआर | बुधवार, 17 दिसंबर 2025

रोजगार सृजन राज्य की प्राथमिक जिम्मेदारी है, क्योंकि बिना काम के अर्थव्यवस्था केवल आंकड़ों में जीवित रहती है - जॉन मेकडॉनलैड

राज्यों पर भार

केन्द्र सरकार मनरेगा की जगह विकसित भाग-भांटी फंड वेंगवार एंड आजीविका मिशन (प्राप्ति) लेकर आ रही है। प्राप्ति क्षेत्रों में ग्रामीण और वेंगवार दूर करने के उद्देश्य से सरकार ने 2005 में नरेगा की शुरुआत की थी। बाद में योजना के साथ मिलाया गांधी का नाम जोड़ा गया। अब पूरी स्क्रीन नए नाम-रूप के साथ आ रही है, तो कश्चित्ता का सवाल है कि मिलाया गांधी का नाम क्यों हटाया जा रहा है? लेकिन इसे लेकर एक पिना इससे भी बड़ी है।

जिम्मेदारी डाली। अभी तक मनरेगा में मजदूरी का पूरा खर्च केंद्र उठाता आया है। वहीं, प्राप्ति क्षेत्रों में जो भूतरीकरण लगाने हैं, उसका भी 75% खर्च केंद्र वहन करता है। नए पिना में इस खर्च की बड़ी जिम्मेदारी राज्य पर डाली गई है। केंद्रशासित प्रदेशों, गुजरात और हिमाचल प्रदेश को छोड़ दें, तो बाकी राज्यों को 40% खर्च उठाना पड़ेगा। सरकार का अनुमान है कि नई योजना लगाने के बाद पहले साल का खर्च लगभग 1.51 लाख करोड़ होगा। इसमें से केवल 96 हजार करोड़ देगा, जबकि बाकी भार राज्यों पर आएगा।

कटौती की मुश्किल। राज्यों के लिए इस अतिरिक्त बोझ को उठाना मुश्किल हो सकता है। आंध्र प्रदेश, हरियाणा, केरल, पंजाब, राजस्थान, तमिलनाडु, बिहार और गुजरात जैसे राज्य पहले ही बजट पर खर्च का समझा कर रहे हैं। नई योजना के लिए अतिरिक्त बजट का इंतजाम करना मुश्किल हो सकता है। आंध्र ने तो अभी से योजना के विचारों के बारे में लेकर बिना जवाब दिए हैं, जबकि बाई BAP के सहयोगी TDP की सरकार है। उर यह है कि बजट से जुड़ी परेशानी के कारण योजना का उद्देश्य चलने में न पड़ जाए।

काम की कमी। मनरेगा के तहत 100 दिनों के काम की गारंटी है, जबकि नया पिना 125 दिन काम की गारंटी देता है। हालांकि इन नई दिनों का तब तक कोई फलाना नहीं है, जब तक कि वास्तव में इंतजाम न मिले। अभी की हकीकत यह है कि 2024-25 में केवल 40.7 लाख परिवारों को ही रोज रोजगार मिल सका था। इस दौरान मनरेगा के तहत काम मिलने का औसत केवल 50.24 दिन रहा। यानी काम के दिन बढ़ने से भी ज्यादा जरूरी यह सुनिश्चित करना है कि वास्तव में काम मिले।

टकराव की आशंका। नई योजना में केंद्र ने राज्यों पर ज्यादा जिम्मेदारी तो डाली है, पर अधिक अधिकार अपने पास रखे हैं। किस प्रदेश को कितना काम देना है, यह केंद्र तय करेगा। इससे आगे जाकर विपक्ष शासित राज्यों के साथ टकराव हो सकता है।

नाभि में तीर

जाला हुस का!

कुमार साहब जब तक नीकरी में रहे, मिसेज कुमार की सामाजिक गतिविधियाँ निरंतर चलती रहीं। कभी किसी के मुँडन में दिख जाती थी, तो कभी किसी के नामकरण में। खाली-खाली हो या खड़े, किताप पढ़ी तो या माता की चौकी, किसी घरे में शामिल होना हो या घरना देना, हर जगह उनकी उपस्थिति प्रमुखता से रहती थी। पोते-पोती वाली हो चुकीं, फिर भी उनके पास घर पर टिकने की नहीं थी। पना नहीं कैसे वह सच प्येन कर लेती थीं। कुमार साहब को टिप्पण होने में छह महीने बचे थे, तभी से बहाना शुरू कर दिया था कि अब आगे वह सभी जगह जोड़ी में ही दिखेंगी। लड़फे को अपना एंजिय करेगी।

छह महीने बाद जब कुमार साहब रिटायर हुए, तो कुछ दिन वह वाकई जोड़ी में दिखीं। आधी-आधी वह होतीं, पीछे-पीछे रहतीं। लेकिन वह सिलसिले कुछ ही दिन चला। बाद में साहब ने हाथ खड़े कर दिए। पूरी तरह आराम करण। किसी भी फिस्म को आपाधापी में नहीं रहना है। इस अलखे का मिसेज कुमार की सोहत घर कोई असर नहीं पड़ा। उल्टे वह ज्यादा बेचिफ हो गईं। घर की जो थोड़ी-बहुत चिंताएं थी, साहब के रिस्तर पर डाल दीं। लेकिन वह बेचिफि ज्यादा दिन टिक नहीं सकीं। मिसेज कुमार अब साहब को एक फल भी अकेले नहीं छोड़ना चाहतीं।

क्या कुमार साहब गंभीर रूप से बीमार पड़ चुके हैं? क्या मिसेज कुमार का समय उनकी सेवा में बीत रहा है? न आभाई न। मजबूत कुछ और ही है। दरअसल, पिछले दिनों कुमार साहब को एक सुंदरी ने हमनीपट कर अपने जाल में फंसा लिया और एक ही झटके में 25 लाख की चाल लगा दी। कहीं से एक पैसवर्क रिक्वेस्ट मिली थी। उसे एक्सेप्ट किया, तो मेसेंजर पर बात होने लगी। इस तरह हुस का जाल बिछा और एक OTAP से काम-तपाम हो गया। अब मिसेज कुमार ने करम खा ली है कि साहब को कभी भी घर में अकेले नहीं छोड़ेंगी। उध के साथ टकराव भी बढ़ गया है। हुस के जाल में फिर फंस सकते हैं!

एकदा संकलन : रेनु सेनी

5 श्रोता भी कम नहीं

पंडित विष्णु दिगंबर फल्लुकर आंध्र प्रांत, कन्नडा साधना और संगीत के प्रति आजीवन समर्पण के प्रतीक थे। वे के.पी. विष्णुनाथ या कि संगीत केवल दखारे या रीतिगत गानों की संघि नहीं, बल्कि जनसाधारण की जीवन संघि है।

इसी संघि के साथ वह आजीवन घर संगीत को समर्पण के त्यागक बनें तक पहुंचे। नई दुनिया में नूतने हुए। एक बार पानवर्ग के उद्देश्य से उनका एक संगीत कार्यक्रम आयोजित किया गया। दुर्भाग्यवश प्रचार-प्रसार के अभाव में कार्यक्रम के दिन साधारण लगभग खाली रहा। केवल 5 श्रोता टिकट लेकर उपस्थित थे। इससे आश्चर्यक निराश हो गए और उन्होंने बंडित फल्लुकर से कार्यक्रम हट करने का अनुरोध किया। उन्होंने शांत स्वर में कहा, 'जो 5 श्रोता आंध्र मध्य निवासकर संगीत सुनते आए हैं, वे मेरे लिए काम नहीं हैं। संगीत संघि नहीं, साधना चाहता है।' यह कहकर उन्होंने पूरी तन्मयता और प्रश्र के साथ गायन आरंभ किया। उनकी स्वर-लहरें खाली सागार भी जीत ले उठीं। उन श्रोताओं ने फल्लुकर के गायन की चर्चा पूरे नगर में फैलाई दी। उनकी साधना और समर्पण की गुंजा समीप प्रेक्षित तक पहुंची। फल्लुकरवरूप आधुनिक नव गुंजा संगीत प्रस्तुत, तो साधारण खूबखूब भरा था और टिकटों के लिए लंबी कतारें लगी थीं।



Sobrata Dhar

2025 की पहली छमाही में प्रिंट मीडिया की ग्रोथ 3%, TV से जुड़े हैं 23 करोड़ घर

प्रगतिपथ पर अखबार और TV

दिल्ली-मुंबई में कई प्रभावशाली लोगों को गलतफहमी है कि अब बीजेपी TV देखना है या बीजेपी अखबार या किताबें पढ़ना है? खासकर, बड़े सरकारी अफसर और जमीनी सचिवों से कटे हुए कुछ कॉन्सोर्ट प्रबंधकों को भी यह कान नहीं सुन-देख है। मैं उनसे असहमत हूँ।

90 करोड़ दर्शक। अधिकतर आंकड़े बताते हैं कि 2025 में 23 करोड़ घर और 90 करोड़ दर्शक TV से जुड़े हुए हैं। तभी तो इस के गलतफहमी विचारों पर नितिन नारायण के एक दिन पहले का एक निजी ग्रुप के हिंदी और अंग्रेजी TV चैनलों को इंटरव्यू दिया। 2002 में भी नितिन ने दूरदर्शन और एक निजी TV चैनल को इंटरव्यू दिया था। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का रेडियो घर पर मन की बात कार्यक्रम देश के अधिकांश न्यूज चैनल प्रसारित करते हैं।

प्रिंट मीडिया की ग्रोथ। मीडिया और एंटरटेनमेंट सेक्टर की 2.5 लाख करोड़ से बढ़कर 2.7 लाख करोड़ रुपये की आय बताती है कि उद्योग का अर्थिक मॉडल बदला पर पक्काबूत बना हुआ है। प्रिंट मीडिया ने भी 2025 की पहली छमाही में सर्कुलेशन में 2.77% की वृद्धि दिखाई। इन संकेतों के बीच सबसे बड़ा खतरा और अवसर दोनों डिजिटल में हैं, जहां नियम, टेक्नोलॉजी और नकारात्मक राश्वरत से तप होगा कि अगले दशक मीडिया को सेहत और लोकतंत्र के लिए सकारात्मक बनाया जा सके।

डिजिटल का असर। 2025 में एक और पारंपरिक TV की पहुंच और उस



पर भरोसा बना हुआ है। नती डिजिटल प्लेटफॉर्म-OTT, सोशल मीडिया, अधिकतर डिजिटल प्लेटफॉर्मों पर जा न्यूज ऐस भी दर्शक और विज्ञापन खींच रहे हैं। यही ट्रेंड न केवल दर्शकों का व्यवहार बल्कि मीडिया हाउसों के वजन, विज्ञापन मॉडल और नियंत्रण के स्वरूप को भी बदल रहा है। उद्योग रिपोर्टों के अनुसार, कुल TV स्क्रीन बजट 2024 में लगभग 19 करोड़ था, जबकि 2026 तक 21.4 करोड़ पहुंचने का अनुमान है। यह दर्शक अखबार TV को, विशेषकर समाचार और क्षेत्रीय सूचनाओं के लिए निर्णायक

अलाव के लिए करती है। विश्वास करता मुश्किल लग सकता है कि जनवरी-जून 2025 आडिड-पेरियड में

दैनिक अखबारों की एवरेज कर्वालिस्ट्रॉफ सेलस 2.974 करोड़ प्रतिवर्ष रही, जो जुलाई-दिसंबर 2024 के 2.89 करोड़ से 2.77% अधिक थी। यानी इसमें 8.02 लाख प्रतिवर्ष की वृद्धि हुई।

प्रिंट पर भरोसा। कई क्षेत्रों में पाठक आज भी स्थानीय खबरों, सूचनाओं, रोजगार सूचनाओं और क्षेत्रीय भाषा की खबरों के लिए अखबार पर भरोसा रखते हैं। कस्तूर-गांधी से ही नती महानगरों में भी सामान्य लोग अखबारों को विश्वस्तोय मानते हैं। मगर गहल गांधी मेमोरियल मीडिया के बजट इंटरनेट पर ज्यादा खर्च करते हैं।

फैक न्यूज का खतरा। डिजिटल माध्यमों पर नई पीढ़ी का समाचार देखना-पढ़ना बढ़ा है, पर भरोसा घट रहा है। संयुक्त इंटरनैट्यूट की रिपोर्टों के अनुसार, डिजिटल न्यूज की ज्यादा पहुंच शहरी व युवा वर्ग में है। लेकिन फैक न्यूज और हेर खींच का खतरा साथ में बढ़ रहा है। सोशल मीडिया, मेसेजिंग ऐस और वाकल विडियो के माध्यम से गलत सूचनाएं तेजी से फैलती हैं। मेसेजिंग ग्रुप्स (जैसे व्हाट्सएप) में वास्तविकता और सचन से फैलती है। **निगमन जरूरी**। 2025 तक AI सहाय्य आडिड/विडियो एडिटिंग में छोड़े और गलत पहचान की घटनाएं बढ़ा दी हैं। उनके लिए नियमों में विशिष्ट प्राधान की कमी चिंता का विषय है। अब निर्यक्ति कंटेंट और सचनवा डिजिटल, ऑटोमेटेड सचनवा नट और स्टैंडर्ड मेट्रिक्स की आवश्यकता बढ़ी है। जैसे-जैसे डिजिटल माध्यमों पर नियंत्रण बढ़ेगा, अधिकांशों की स्वतंत्रता और सेसरशिप के बीच संतुलन साधना होगा। (लेखक वरिष्ठ पत्रकार हैं)

अब शांत ज्वालामुखियों से है बड़ा खतरा!

दुनिया में अगल ज्वालामुखी विस्फोट होने ज्वालामुखियों में हो सकता है जो शांत दिखते हैं और जिन पर नजर नहीं रखी जाती। इटली में रिस्तिरी के माउंट एटना या अमेरिका के येलोस्टोन जैसे ज्वालामुखियों की निरंतर निगरानी की जाती है, लेकिन वैश्वीकरण ने अब शांत ज्वालामुखियों से भी सतर्क होना की सलाह दी है। ऐसे विस्फोट दूर तक असर करने वाले हो सकते हैं।

12 हजार सालों से सुप्त। एक ज्वालामुखी ने अभी तक एक्क ही किछ है। नन्वर में इथियोपिया का हेलेम ज्वालामुखी करीब 12,000 सालों में पहली बार फूटा। इससे पहले के सुप्त करीब 14 किलोमीटर ऊपर आसमान में उड़े। ज्वालामुखी से निकलता मलब

यम में गिर और गुल का बदल डतरी भारत के ऊपर हवा में भी फूटता।

जंगल हुए समतल। ऐसे ही 1982 में मेक्सिको का एल विस्तेन ज्वालामुखी सदियों तक शांत रहने के बाद अचानक फूट पया। इसके इराफन की श्रृंखला ने हलन कर दिया था। चट्टान गुल और गैस के गर्म स्थलन ने जंगल के बड़े इलाकों को समतल कर दिया। नटिये पर बाध बन गए, इमाले तबाह हो गई और गुल पारोपमान तक पहुंच गई।

वैश्वीक तापमान में गिरावट। इंडोनेशिया के माउंट टेंबोरा ज्वालामुखी में 1815 में एक पक्कर विस्फोट ने अनीतन लोगों की जान ले ली और बड़े पैमाने पर फसलों को बर्बाद कर दिया। विस्फोट के बाद आसमान में गुल भर गई, सूरज की रोशनी फाँकी पड़ गई और वैश्वीक तापमान महीनों गिरा रहा।

सक्रिय ज्वालामुखी। ज्वालामुखी विस्फोटों से मिले सबक के बावजूद



आज आप से भी कम रक्षिय ज्वालामुखियों पर नजर रखी जाती है। इंडोनेशिया, फिलिपींस और वेनजुएला के 160 ज्वालामुखी पर नजर रखे जाते हैं। ज्वालामुखी पर नजर रखे जाते हैं और इन्हें सतर्क समझा गया है। बड़े विस्फोट रिस्क अपने आसपास की आबादियों पर ही असर नहीं डालते। वे कुछ समय के लिए ग्रह को डंडा कर सकते हैं, मॉनसून में रुकवट डाल सकते हैं और पूरे क्षेत्रों में फलान का कर सकते हैं।

बच्चों में डायबिटीज से इस तरह लड़ रहा तमिलनाडु

दुनिया में डायबिटीज के मरीज सबसे तेजी से भारत में बढ़ रहे हैं। विश्व की बात है कि वयो भी इसकी वोट में आ रहे हैं। इंडोनेशिया डायबिटीज फेडरेशन के मुताबिक, देश में टाइप-1 से 3.1 लाख बच्चे डायबिटीज हैं। ऐसे में डायबिटीज सकार की एक फल कारगर हो सकती है।



रजिस्ट्रेशन का फायदा

तमिलनाडु सरकार ने गिरी सल अगल में Type-1 Diabetes Registry बनाई है। इस साल दिसंबर में रजिस्ट्रेशन पांच हजार के पार हो गया। मसंद यह जानना है कि राज्य में कितने बच्चे टाइप-1 डायबिटीज से पीड़ित हैं, उन्हें किस तरह का इलाज चाहिए। टाइप-1 पर फोकस इसलिए, क्योंकि इसने रोज खुद इंसुलिन लेना पड़ता है।

कंट्रोल में आया ब्लड शुगर

राज्य सरकार ने 7 सरोजालाइट केयर सेंटर बनाए हैं और 13 की एलागि चल रही है। यहां बच्चे को अच्छी क्वालिटी का इंसुलिन और जर्बो टेस्टर की सुविधा मिलेगी है। उनके माता-पिता को बीमारी के बारे में जानकारी भी दिया जाता है। जिन बच्चों का इलाज इस योजना के तहत हो रहा है, उनका ब्लड शुगर पहले से बेहतर कंट्रोल में है।



जीवन एक वाद्य यंत्र है, इसी में आनंद के सुर

निर्मल जैन

जीवन सतत प्रवाह है, जिसकी धारा कभी एक-सो नहीं बहती। इसमें संगीत के सुरों की तरह उतार-चढ़ाव हैं, सुख-दुख हैं, कही गहनता है तो कही विरलता। सही ढंग से कला जाए तो जीवन सुख और दुख के मिश्रण से अधिक कुछ नहीं। हर सुख अपने साथ दुख की संभावना लेकर आता है, ठीक वैसे ही जैसे खेत में बीज बोने के बाद फसल के साथ-साथ खरपूसार भी उग आते हैं। प्रशंसा से हमें सुख मिलता है, लेकिन उसी के साथ अहंकार भी जन्म ले लेता है। कभी अहंकार आगे कालकर दुख का कारण बनता है। इसलिए यह स्वाभाविक है कि प्रशंसा के बाद निंदा भी आती है, और जिस सुख का अनुभव प्रशंसा से होता है, उससे कभी अधिक पीड़ा अपमान के समय महसूस होती है। सुख और दुख मन की अवस्थाएँ हैं। जब हम सुख होते हैं, तो समय धीमा पड़ लगकर उड़ जाता है, जबकि दुख में काली समय बहुत धीमी गति से सरकता है। अत्यधिक सुख की दुखदार्थिक हो सकता है, और कोई भी दुख ऐसा नहीं जो समय के साथ सुख में न बदल सके। जीवन एक वाद्य-यंत्र की तरह है, जिसमें अनेक राग बज सकते हैं। यह हमारे ऊपर है कि हम किस राग बजाने-सो भी पुन चुनते हैं। जिसका मन उसके वश में है, कही वास्तव में सुखी है, क्योंकि कोई उसे उसकी इच्छा के बिना दुखी नहीं कर सकता। इसके विपरीत, जिसका मन दूसरी की प्रतिक्रियाओं और परिस्थितियों के अधीन है, वह सहन ही दुखी हो जाता है। प्रगति कर्म के साथ ही हमें दो बरदान देती है- शरीर और बुद्धि। समय के साथ दोनों का विकास होता है। बुद्धि के विकास ने ही मनुष्य को सुविधाएं बुझने में सक्षम बनाया। सोने का दुख इसलिए होता है, क्योंकि हम उन चीजों को अपना भन लेते हैं, जिसका वास्तविक मूल्य सीमित है। सुख और दुख मन की स्थितियाँ हैं। जब तक हम भौतिक वस्तुओं को ही जीवन का खर मानते रहेंगे, तब तक आनंद की अनुभूति नहीं हो पाएगी। जैसे ही हम इस सत्य को समझ लेते हैं, सुख-दुख पर हम नियंत्रित करना सीख जाते हैं।



जीवन एक वाद्य-यंत्र की तरह है, जिसमें अनेक राग बज सकते हैं। यह हमारे ऊपर है कि हम किस राग बजाने-सो भी पुन चुनते हैं। जिसका मन उसके वश में है, कही वास्तव में सुखी है, क्योंकि कोई उसे उसकी इच्छा के बिना दुखी नहीं कर सकता। इसके विपरीत, जिसका मन दूसरी की प्रतिक्रियाओं और परिस्थितियों के अधीन है, वह सहन ही दुखी हो जाता है। प्रगति कर्म के साथ ही हमें दो बरदान देती है- शरीर और बुद्धि। समय के साथ दोनों का विकास होता है। बुद्धि के विकास ने ही मनुष्य को सुविधाएं बुझने में सक्षम बनाया। सोने का दुख इसलिए होता है, क्योंकि हम उन चीजों को अपना भन लेते हैं, जिसका वास्तविक मूल्य सीमित है। सुख और दुख मन की स्थितियाँ हैं। जब तक हम भौतिक वस्तुओं को ही जीवन का खर मानते रहेंगे, तब तक आनंद की अनुभूति नहीं हो पाएगी। जैसे ही हम इस सत्य को समझ लेते हैं, सुख-दुख पर हम नियंत्रित करना सीख जाते हैं।

बड़े नामों को छोड़ 'नया नाम' क्यों चुना BJP ने

नितिन नारायण की शीर्ष पद पर नियुक्ति के जरिए पार्टी ने एक बार फिर अपने उसी अंशव को दिखाया है जिसके लिए 2014 के बजट को लेकर जी चर्चाएं चले रही थीं, उनमें कई 'बड़े नाम' उल्लेख हो रहे हैं। किसी को सच की कसौटी में कसकर रस में आगे बढाया जा रहा था तो किसी को संपत्तिगत क्षमता और फोडी-शह की संसद के तौर पर पूछा जा रहा था। लेकिन जब नए राष्ट्रीय कार्यकारी अध्यक्ष का फैसला हुआ तो वे सारे नाम पीछे छूट गए।

पीढ़ीगत बदलाव का संकेत। 45 वर्षीय नितिन नारायण के बारे में लोग इंटरनेट पर सच कहे लगे। ऐसा भी नहीं कि नितिन नारायण कोई अजनब शक्तिमान हों, लेकिन अब तक उनकी पहचान और उनकी क्षमता की चर्चा प्रायः विहार में ही रही है। विहार से बाहर फिर खसीसुद में जरूर वे पहचान नाम रहे क्योंकि BJP के छतरीसद प्रभारी थे और 2023 विधानसभा चुनाव में वहां बुरा स्तर तक काम करने का निम्न भी संभावना था।

कार्यकर्ताओं को संदेश। BJP हमेशा ही दूसरी पार्टी के पर-परिवादाद का आरोप लगाती रही है। वह कहती रही है कि वहां अध्यक्ष जैसे पद पर एक जगह परिवार के लोग ही बैठ सकते हैं। हालांकि नितिन नारायण खुद भी एक BJP नेता के परिवार से ही आते हैं। उनके पिता नितिन किशोर सिन्हा विहार में BJP विधानसभा से और उनके पिता के बड़े भाई हैं। सेंट पर ही उपचुम्बक लड़कर नितिन नारायण ने चुनावी वनजीति में प्रवेश किया। लेकिन BJP इसे परिवारवाद नहीं मानती है।

पंथ मजदी संसद में कह चुके हैं कि अगर दो लोग किसी परिवार से आगे बढ़ते हैं, तो वह स्वागत योग्य है, लेकिन अगर कभी परिवार पूरी पार्टी को लोकेन लगता है, तो वह परिवारवाद है जो लोकतंत्र के लिए निहित का विषय है। नितिन नारायण के जरिए BJP ने फिर अपने कार्यकर्ताओं को संदेश दिया है कि पार्टी में अनुसूचकों के साथ काम करने और प्रतिस्पर्धा करने का इरादा मिलता है। साथ ही 'बड़े नाम' का मिथ BJP ने फिर एक बार तोड़ा है।



नितिन नारायण

रीडर्स मेल

भाषा की गरिमा

16 दिसंबर का संपादकीय 'अमर्यादित भाषा' वर्तनीति में गिरी भाषाई मर्यादा की एक गंभीर समस्या को रेखांकित करता है। लोकतंत्र में विवेच और अहमर्षित स्वाभाविक है, लेकिन वे शालीनता और पद की गरिमा के दायरे में हो, यही अर्थात् रहती है। जब वर्तनीति दसक या नैना मर्यादा लक्ष्य है, तो उसका असर केवल आपसी टकराव तक सीमित नहीं रहता, बल्कि सम्

**सौरचुटा इन्फोटेक टॉप ओपन प्लास की तुलना में 20% अधिक गर्म पानी, एल्यूमीनियम बापाटा प्राप्त प्रयोगशाला के साथ परीक्षित और सत्यापित, 15 ली. और 25 ली. केरिएट के लिए लान्गु.

NOTE :-

[: राजस्थान पत्रिका , दैनिक जागरण delhi, नवभारत टाइम्स delhi, अमर उजाला delhi, हिन्दुस्तान delhi, Pioneer hindi delhi, जनसत्ता delhi,]

English NEWSPAPERS

[Times Of India delhi, Indian Express delhi, The Hindu delhi, Financial Express delhi, economic times delhi , the Pioneer english delhi , the tribune delhi] ETC.

We are providing all news paper pdf hindi and English want to read daily newspapers by pdf please msg me on telegram

2. आकाशवाणी (AUDIO)

whatsapp Group ka link pane ke liye
Newspaper_pdf_bot par jaye.

Click here to contact:- https://t.me/Newspaper_pdf_bot

Or type in Search box of Telegram

@Newspaper_pdf_bot And you will find a channel

BACKUP GROUP LINK

<https://t.me/joinchat/5P9EL1JaQoYzNTI1>

Hindi-English News Paper

Website:- onlineftp.in